अनन्य रसिक शिरोमणि स्वामी श्रीहरिदासजी कृत

अष्टादश सिद्धान्त के पद

ज्यौंही – ज्यौंहि तुम राखत हौ, त्यौंही – त्यौंही रहियत हौं, हो हरि।
और तौ अचरचे पाँय धरौं सो तौ कहौ कौन के पैंड़ भरि।।
जद्यपि कियौ चाहौ, अपनौ मनभायौ, सो तौ क्यों करि सकौं, जो तुम राखौ पकरि।
कहिं श्रीहरिदास पिंजरा के जनावर ज्यौं, तरफराय रह्यौ उड़िबे कौं कितौऊ करि।।1।।

काहू कौ बस नाँहि, तुम्हारी कृपा तें सब होय, बिहारी बिहारिनि।
और मिथ्या प्रपंच, काहे कौं भाषियै, सु तौ है हारिनि।।
जाहि तुमसौ हित, तासौं तुम – हित करौ, सब सुख – कारिनि।
श्रीहरिदास के स्वामी – स्यामा – कुँजबिहारी, प्रानन के आधारिनि।।2।।

कबहूँ – कबहूँ मत इत – उत जात, यातैंब कौन अधिक सुख।
बहुत भाँतिन घत आनि राख्यौ, नाहिं तौ पावतौ दुःख।।
कोटि काम लावन्य बिहारी, ताके मुहाँचुहीं सब सुख लियैं रहत रुख।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी कौ दिन देखत रहौं विचित्र मुख।।3।।

हरि भज हरि भज, छाँड़ि न मान नर – तन कौ।
मत बंछै, मत बंछै रे तिल – तिल धन कौं।।
अनमाँग्यौ आगैं आवैगौ ज्यौं पल लागै पल कौं।
कहिं श्रीहरिदास मीचु ज्यौं आवै, त्यौं धन है आपुन कौं।।4।।

ए हरि, मो-सौ न बिगारन कौ तोसौ न सवाँरन कौ, मोहि-तोहि परि होड़।
कौन धौं जीतै, कौन धौं हारै, पर बदी न छोड़।।
तुम्हारी माया बाजी विचित्र पसारी, मोहे सुर मुनि काके भूले कोड़।
कहिं श्रीहरिदास हम जीते, हारे तुम तउ न तोड़।।5।।

बंदे, अखतियार भला।
चित न डुलाव, आव समाधि – भीतर, न होहु अगला।।
न फिर दर – दर, पिदर – दर, न होहु अँधला।
कहिं श्रीहरिदास करता किया सो हुआ सुमेर अचल चला।।6।।

हित तौ कीजे कमल नैन सौं, जा हित के आगैं, और हित लागै फीकौ।
कै हित कीजे साधु संगति सौं, ज्यौं कलमष जाय सब जी कौ।।
हरि कौ हित ऐसौ जैसौ रंग मजीठ, संसार हित रंग कसूँभ दिन दुती कौ।
कहिं श्रीहरिदास हित कीजै श्रीबिहारीजू सौं ओर निबाहु जानि जी कौ।।7।।

तिनुका ज्यौं बयार के बस।
ज्यौं चाहैं त्यौं उड़ाय लै डारै, अपने रस।।
ब्रह्म लोक, सिवलोक और लोक अस।
कहिं श्रीहरिदास विचारि देखौ, बिना बिहारी नाँहि जस।।8।।

संसार समुद्र, मनुष्य मीन – नक्र – मगर, और जीव बहु बन्दसि।
मन बयार प्रेरे, स्नेह फन्द फन्दसि।।
लोभ पिंजर, लोभी मरजिया पदारथ चार खन्द खन्दसि ।
कहिं श्रीहरिदास तेई जीव पार भये, जे गहि रहे चरन आनन्द-नन्दसि।।9।।

हरि के नाम कौ आलस कत करत है रे, काल फिरत सर साँधें।
भेर - कुबेर कछू नहिं जानत चढ़यौ रहत है काँधे।।
हीरा बहुत जवाहर संचे, कहा भयौ हस्ती दर बाँधें।
कहिं श्रीहरिदास महल में बनिता बनि ठाढ़ी भई, एकौ न चलत, जब आवत अंत की आँधें।।**10**।।

देखौ इन लोगन की लावनि।
बूझत नाहिं हरि चरन - कमल कौं, मिथ्या जनम गँवावनि।।
जब जमदूत आइ घेरत, तब करत आप - मन भावनि।
कहिं श्रीहरिदास तबहिं चिरजीवौ, जब कुँजबिहारी चितावनि।।**11**।।

मन लगाय प्रीति कीजै कर करवा सौं, ब्रज - वीथिन दीजै सोहनी।
वृन्दावन सौं, वन - उपवन सौं, गुंज - माल हाथ पोहनी।।
गो गो सुतन सौं, मृगी मृग - सुतन सौं, और तन नैंकु न जोहनी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुँजबिहारी सौं चित, ज्यौं सिर पर दोहनी।।**12**।।

हरि कौ ऐसोई सब खेल।
मृग तृष्ना जग व्यापि रह्यो है, कहूँ बिजोरौ न बेल।
धन - मद, जोवन - मद, राज मद ज्यौं पंछिन में डेल।
कहिं श्रीहरिदास यहै जिय जानौं, तीरथ कौ सौ मेल।।**13**।।

झूँठी बात साँची करि - दिखावत हौ हरि नागर।
निसि - दिन बुनत उधेरत जात, प्रपंच कौ सागर।।
ठाट बनाइ धरयौ मिहरी कौ, है पुरुष तैं आगर।
सुन श्रीहरिदास यहै जिय जानौ, सपने कौ सौ जागर।।**14**।।

जगत प्रीति करि देखी, नाहिंनें गटी कौ कोऊ।
छत्रपति रंक लौं देखे, प्रकृति - विरोध बन्यौ नहीं कोऊ।
दिन जो गये बहुत जनमनि के, ऐसें जाउ जिन कोऊ।
कहिं श्रीहरिदास मीत भले पाये बिहारी, ऐसे पावौ सब कोऊ।।**15**।।

लोग तौ भूलें, भलें, भूलें, तुम जिनि भूलौ मालाधारी।
अपुनौ पति छाँड़ि औरन सौं रति, ज्यों दारनि में दारी।
स्याम कहत तेई जीव मोतें विमुख भये, सोऊ कौन, जिन दूसरी करि डारि।
कहिं श्रीहरिदास जज्ञ - देवता - पितरन कों श्रद्धा भारी।।**16**।।

जौलौं, जीवै, तौलौं हरि भज रे मन और बात सब बादि।
द्यौस चार के हला भला, में कहा लेइगौ लादि?
माया - मद, गुन - मद, जोवन - मद, भूल्यौ नगर विवादि।
कहिं श्रीहरिदास लोभ चरपट भयौ, काहे की लगै फिरादि।।**17**।।

प्रेम - समुद्र रूप - रस गहरे, कैसैं लागैं घाट?
बेकारयौं दै जान कहावत, जानिपन्यौं की कहा परी बाट?
काहू कौ सर सूधौ न परै, मारत गाल गली - गली हाट।
कहिं श्रीहरिदास जानि ठाकुर - बिहारी, तकत ओट पाट।।**18**।।

Phone : +91-565-2444858, +91-9897233358, 9897919717
Email : info@bankeybihari.info, brijbhakti@yahoo.co.in
website : www.bankeybihari.info